B-III
L-34
MIH

उपलब्धियाँ - महत्व :- 1922 के पूर्व कांग्रेस

- 1923 के चुनाव में अच्छा प्रदर्शन रहा विशेषकर केन्द्रीय विधानसभा में।
- 1925 में विट्ठल भाई पटेल को केन्द्रीय विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित कराने में भी स्वराज पार्टी के लोगों को सफलता मिली।
- द्वैध शासन 1919 का अधिनियम तथा ब्रिटिश सरकार की नीतियों की कमियों को उजागर किया।
  जैसे- Trade dispute act एवं Public Safty Bill से संबंधित कमियों को लोगों के समक्ष रखा।
- निरंतर सरकार से विधानमण्डल में विरोध किया, असहयोग किया और एक प्रकार से विधानमण्डल में असहयोग आन्दोलन को जारी रखा।
- असहयोग आन्दोलन के पश्चात उत्पन्न राजनीतिक शून्यता को भरने का कार्य किया।
- संसदीय राजनीति में भाग लेकर कुछ वर्षों तक सरकार समर्थकों की गतिविधियों को नियंत्रित रखा।
- संसदीय कार्य प्रक्रिया का जो अनुभव हुआ वह आगे चलकर उपयोगी साबित हुआ।

KGS IAS
Scanned by CamScanner

• संसदीय राजनीति भी अंग्रेजों के विरोध का एक महत्वपूर्ण मंच हो सकता है इस तथ्य को भी स्थापित किया।

नोट :-

• 1926 के चुनाव में स्वराजियों का प्रदर्शन बेहतर नहीं था।

• 1925 में चितरंजन दास की मृत्यु, कुछ स्वराजी नेताओं के द्वारा सहयोग का निर्णय, साम्प्रदायिकता का प्रभाव तथा निरंतर विरोध की राजनीति की सीमा इत्यादि कारणों से स्वराज पार्टी की स्थिति कमजोर हुई।

प्रत्युत्तरवादी :-

इन स्वराजी नेताओं को कहा गया है जो सरकार के साथ सहयोग करना चाहते थे जैसे- लाजपत राय, मालवीय जी, एन.सी केलकर इत्यादि।

परिवर्तन विरोधी :-

जो चुनाव में भाग लेने के पक्ष में नहीं थे उन्हें परिवर्तन विरोधी कहा गया है।

प्रमुख नेता :- राजगोपालाचारी, M.A अंसारी
वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद
(गांधीवादी नेता)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR
Scanned by CamScanner

विचार -

इनका मत था चुनाव में भाग लेने से परस्पर प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा, रचनात्मक कार्यों की उपेक्षा होगी और मुख्य लक्ष्य से भटक जाएंगे अंततः राष्ट्रीय आन्दोलन कमजोर ही होगा।

गतिविधियां :-

- अखिल भारतीय स्तर पर रचनात्मक कार्यों का प्रसार, सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कांग्रेस के संगठनात्मक ढांचे का विस्तार, देश के अलग-अलग हिस्सों में बड़े बड़े आश्रम एवं शिक्षा केन्द्रों का प्रसार
जैसे - बारदोली - वेडछी आश्रम - जनजातीयों के कल्याण के लिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नोट :-

- 1924 में कांग्रेस का बेलगांव अधिवेशन
  ↳ अध्यक्ष - महात्मा गांधी
- 1925 में कांग्रेस का कानपुर अधिवेशन
  ↳ अध्यक्ष - सरोजनी नायडू (प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष)

नोट :-

1918 में राष्ट्रीय उदारवादी संघ नामक राजनीतिक दल का गठन।
↳ सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं अन्य उदारवादी नेता

Scanned by CamScanner

• 1923 में बोरसाद सत्याग्रह (गुजरात)
नेता - वल्लभभाई पटेल

साइमन आयोग का गठन

कब, क्यों, समय से पूर्व, भारतीयों के द्वारा विरोध

• 1927 में साइमन की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय आयोग का गठन। ये सभी ब्रिटिश संसद के सदस्य थे।

क्यों :

• 1919 के अधिनियम में प्रावधान था कि 10 वर्षों के पश्चात अधिनियम की समीक्षा एवं आगामी संवैधानिक सुधारों के लिए एक आयोग का गठन किया जाए।

समय पूर्व क्यों :-

• ब्रिटेन में टोरी दल की सरकार थी और आगामी चुनाव में इसे हारने का डर था। इसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लेबर पार्टी की सरकार भारतीयों को अधिक रियायत दे सकती है
• भारत में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे ऐसी स्थिति में आयोग मनमाना रिपोर्ट तैयार कर सकता था।

भारतीयों के द्वारा विरोध :-

• आयोग में एक भी भारतीयों को शामिल नहीं किया

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

गया था जिसको आधार बनाकर कई पार्टियों ने इसका विरोध किया।
जैसे- कांग्रेस, मुस्लिम लीग का जिन्ना गुट, उदारवादी दल इत्यादि।

नोट :- पंजाब की यूनियनिस्ट पार्टी, मद्रास का न्यायदल मुस्लिम लीग का शफी गुट, और डॉ अम्बेडकर ने आयोग का समर्थन किया।

- दिसम्बर 1927 में कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में आयोग के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया गया (अध्यक्ष - एम.ए अन्सारी)
- 1928 में आयोग ने दो बार भारत की यात्रा की, जिन शहरों में आयोग की यात्रा हुई वहाँ आयोग को काले झंडे दिखाए गए।
- विरोध के क्रम में लाहौर में लाजपतराय को चोट लगी और उनका निधन हुआ।
- भारतीयों के विरोध को देखते हुए भारत सचिव बर्किनहेड ने यह चुनौती दी कि भारतीय राजनीतिक दल सर्वसहमति से राजनीतिक सुधारों पर कोई प्रस्ताव पेश करे।
- इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में 1928 में एक सर्वदलीय समिति बनाई गई और 1928 में ही संवैधानिक सुधारों पर नेहरू रिपोर्ट को जारी किया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

नोट -

दिल्ली प्रस्ताव - 1927 - जिन्ना

- केन्द्रीय विधानमण्डल में मुसलमानों के लिए 1/3 सीटों का आरक्षण हो।
- बंगाल एवं पंजाब में जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण हो।
- सिंध उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत को एक अलग प्रांत का दर्जा दिया जाए।
- पृथक निर्वाचन के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन को लेकर सहमत।

नेहरू रिपोर्ट

- भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिया जाए (व्यापक स्वायत्ता)
- भारत में केन्द्रीय स्तर पर उत्तरदायी सरकार का गठन।
- प्रांतीय स्तर पर उत्तरदायी सरकार।
- केन्द्र एवं राज्य के मध्य विषयों का बंटवारा लेकिन अवशिष्ट शक्तियाँ केन्द्र के पास हों।
- प्रांतों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन का समर्थन।
- अल्पसंख्यकों को संस्कृति के संरक्षण का अधिकार
- अल्पसंख्यकों के लिए विधानमण्डल में आरक्षण का प्रावधान।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

Scanned by CamScanner

- बड़ी संख्या में अधिकारों की माँग जैसे- वयस्क मताधिकार, संगठन बनाने की स्वतंत्रता इत्यादि।
- सिंध एवं उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत को पृथक प्रांत का दर्जा दिया जाए।
- संयुक्त निर्वाचन की माँग।

नेहरू रिपोर्ट का विरोध

- चूँकि जिन्ना की मुख्य मांगों को महत्व नही दिया गया तो जिन्ना पुनः शफी गुट के साथ मिल गए और मार्च 1929 में मुसलमानों के लिए 14 सूत्री माँग को सामने रखा।
- कांग्रेस के भीतर ही जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने इंडिपेंडेंस फार इंडिया लीग नामक संस्था बनाई इसका लक्ष्य था कांग्रेस को पूर्ण स्वराज के लिए प्रेरित करना।
- 1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित हुआ, यदि एक वर्ष के भीतर नेहरू रिपोर्ट को नही माना गया तो कांग्रेस का लक्ष्य होगा पूर्ण स्वराज।

नोट- साइमन रिपोर्ट :-

- भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा नही दिया जाए।
- केन्द्र में उत्तरदायी सरकार का गठन नही किया जाए।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

• प्रांत में द्वैध शासन को समाप्त कर उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाए।

• पृथक निर्वाचन का विस्तार किया जाए तथा दलित समाज को भी इसमें शामिल किया जाए।

• संघीय विधान मण्डल / केन्द्रीय विधानमण्डल का संघात्मक ढांचे के आधार पर पुनर्गठन किया जाए।

दिसम्बर 1929 लाहौर अधिवेशन

अध्यक्ष – जवाहर लाल नेहरू

• पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित।
• प्रतिवर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता की शपथ ली जाएगी (1930 से प्रारम्भ)
• तिरंगा फहराया गया
• कांग्रेस वर्किंग कमेटी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ करने के लिए अधिकृत किया गया।

जनवरी 1930 गांधी जी की 11 सूत्री मांग

• सिविल सेवा के व्यय में 50% की कटौती की जाए।
• सैनिक व्यय में 50% की कटौती की जाए।
• भू राजस्व में कटौती की जाए।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

- कपड़ा उद्योग एवं नौपरिवहन को संरक्षण दिया जाए।
- राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाए।
- नमक कर को समाप्त किया जाए एवं नमक निर्माण पर से सरकार का नियंत्रण समाप्त किया जाए।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR IAS

Scanned by CamScanner

सविनय अवज्ञा आन्दोलन - 1930-34

कारण :-

- गांधी जी के संघर्ष विराम-संघर्ष की रणनीति का अगला चरण था सविनय अवज्ञा आन्दोलन।
- असहयोग के पश्चात परिवर्तन समर्थक एवं परिवर्तन विरोधियों की गतिविधियों से कांग्रेस के संगठनात्मक ढांचे एवं सामाजिक आधार का विस्तार हुआ।
- साइमन आयोग के विरूद्ध राजनीतिक संघर्ष का राष्ट्रीय स्तर पर वातावरण निर्मित हुआ।
- संविधान सुधार के मुद्दे पर सरकार एवं कांग्रेस में गतिरोध बना हुआ था इसे हम साइमन आयोग के गठन, नेहरू रिपोर्ट में देख सकते हैं।
- कांग्रेस के बाहर भी राजनीतिक गतिविधियों के कारण राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ जैसे क्रान्तिकारियों एवं मार्क्सवादियों के द्वारा।
- 1929 में महामंदी की शुरुआत में आन्दोलन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित हुई।
- इसी पृष्ठभूमि में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव कांग्रेस के द्वारा पारित किया गया तथा गांधी जी के 11 सूत्री माँगों को महत्व नहीं दिया गया तथा गांधी जी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
Scanned by CamScanner

की शुरूआत हुई।

Note:-

12 मार्च 1930 को गांधी जी साबरमती आश्रम से दांडी तट के लिए यात्रा प्रारम्भ करते हैं और 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून का उल्लंघन किया। इस कानून के अंतर्गत लोगों को शैक्षणिक संस्थाओं को छोड़ने तथा सरकारी नौकरी एवं विधान मण्डल से त्यागपत्र देने को कहा गया।

किसानों को भू-राजस्व न देने को कहा गया तथा शराब की दुकानों पर धरना का भी आह्वान किया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner